संगीत (तबला) के विषय में पी एच.डी. की उपाधि हेतु संक्षेपिका

Synopsis on

‘Swatantra Tablavadan Mein Gat Evam Unke Prakaron ka Soundaryatmak Vivechan : Ek Vishleshanatmak Adhyayan’

‘स्वतंत्र तबलावादन में गत एवं उनके प्रकारों का सौंदर्यात्मक विवेचन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन’

डिपार्टमेंट ऑफ तबला
फॅकल्टी ऑफ परफॉर्मिंग आर्टस्
दि महाराजा सयाजीराव युनिवर्सिटी ऑफ बरोड़ा

शोधार्थी
सुवर्णा अरविंद घोलकर
रजिस्ट्रेशन नं. **FOPA/68**
रजिस्ट्रेशन दिनांक : **30/12/2017**

मार्गदर्शक
प्रो. डॉ. अजय अष्टपुत्रे

प्रस्तुत विषय पर शोध करने की आवश्यकता
(NEED FOR RESEARCH ON THIS TOPIC)

तबले की एक निज़ी स्वतंत्र और समृध्द भाषा है। दायाँ-बायाँ में अंतर्भूत नाद पर आधारित ध्वन्यनुगामी (Onomatopoeic) भाषा है। व्यवहारिक अर्थ की भाषा नहीं है लेकिन अनुभूति (Feeling) की भाषा जरुर है। स्वंतत्र तबलावादन में इस भाषा का मुख्य रूप से दो रचना-प्रकारों में विभाजन हुआ – विस्तारक्षम रचना और पूर्वसंकल्पित रचना। पेशकार, कायदा, रेला इन विस्तारक्षम रचनाओं के बाद स्वतंत्र तबलावादन में 'गत' जैसी पूर्वसंकल्पित रचना पेश की जाती है। ''स्वतंत्र तबलावादन में गत एवं उनके प्रकारों का सौंदर्यात्मक विवेचन : एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'' इस विषय पर विस्तारपूर्वक चर्चा नहीं मिलती है। इसी कारण इस विषय का विस्तृत अध्ययन कर शोधकार्य किया है। 'गत' पेशकार-कायदा-रेला के बाद ही क्यों बजायी जाती है, 'गत' की बोलपंक्ति और दायाँ-बायाँ पर बजाये जानेवाली उंगलियों की निकास का तालमेल कैसा है, गतटुकड़ा जैसे अन्य प्रकारों से गत भिन्न कैसी है, ऐसे कई प्रश्न मन को आंदोलित करते थे। इन्हीं प्रश्नों के उत्तर प्राप्त कर समस्याओं का निराकरण किया है। रचनाकारों की प्रतिभा, गत के लयबंध, गत के विभिन्न प्रकार एवं गतों के अन्तर्गत निहित सौंदर्यतत्त्वों को उजागर कर इस विषय पर शोध किया है। खुले बाज में गतों की निर्मिति अधिक मात्रा में हुई इस तथ्य को भी इस शोध में उजागर करने का प्रयास किया है।

विभिन्न घरानों की पारंपारिक गतें, बुजूर्ग रचनाकार तथा उनका वादनकौशल्य, प्रतिभा को उजागर करना एक अत्यंत कष्टसाध्य कार्य है, क्योंकि इसमें से अनेक नामी-गिरामी रचनाकार आज जीवित नहीं हैं। उस्ताद हाजी विलायत अली खाँ, उस्ताद चूडियावाले इमाम बख्श, उस्ताद सलारी मियाँ, उस्ताद अमीर हुसेन खाँ जैसे प्रतिभावान बुजूर्ग रचनाकारों ने तथा विद्वान तबलावादकों ने सुंदर गतों की निर्मिति की है। आज भी सभी वादक उन गतों को अपने वादन द्वारा पेश करते हैं। इनमें से विभिन्न घरानों के उस्तादों ने तथा पंडितों ने बनाई हुई या बजायी हुई विभिन्न गतों का उदाहरण

देकर उनके सौंदर्यतत्त्वों का विभिन्न घटकों के आधार पर विश्लेषण किया है। खाली-भरी, नाद, ग्रह, जाति, यति, छंद इनका गतों में किया हुआ प्रयोग तथा विवेचन इस शोधकार्य में किया गया है।

परिकल्पना
(HYPOTHESIS)

'गत' यह एक पूर्वसंकल्पित रचना है। स्वतंत्र तबलावादन में विस्तारक्षम रचनाओं के बाद 'गत' रचना प्रस्तुत की जाती है। इन तथ्यों का विश्लेषण देना इस परिकल्पना का एक अंग है। 'गत' रचना के अन्तर्भूत बोलों का दायाँ-बायाँ पर बजनेवाले बोलों के निकास से सुयोग्य संतुलन होना आवश्यक है। इसलिए 'गत' के रचनाकार को उत्तम तबलावादक होना अनिवार्य है। इसकी विधिवत जानकारी प्रस्तुत करना इस परिकल्पना का अत्यन्त महत्त्वपूर्ण चरण है।

एक अन्य केन्द्रबिन्दु यह भी है कि ज़्यादातर गतों का निर्माण तीनताल में ही क्यों हैं? इसके अलावा मेरी परिकल्पना यह भी है कि फर्रुखाबाद घराने में बड़ी मात्रा में गतें होने का कारण क्या है? 'फरद' जैसे गत प्रकार फर्रुखाबाद और बनारस दोनों घरानों में होते हुए भी उनकी अलग विशेषता क्या है? इस पर भी विश्लेषणात्मक विवेचन प्रस्तुत किया गया है।

आंकड़े एकत्रित करने की विधि
(DATA COLLECTION METHODOLOGY)

१. 'गत' रचनाप्रकार से संबंधित तथ्यों की जानकारी प्राप्त करने के लिए पुस्तकों की मदद ली गई है।

२. इस शोध से संबंधित तथ्य /आंकड़े प्राप्त करने के लिए विद्वानों से साक्षात्कार किए गए हैं।

३. विभिन्न लेखों, स्तंभो में आए गत रचना के विवरणों का उपयोग किया गया है।

४. तथ्यों को प्रस्तुत करने हेतु कई वादकों को 'गत' रचना संबंधित प्रश्नावली भेज कर आंकड़े इकट्ठे किए गए हैं।

५. अन्य पूर्वसंकल्पित रचनाओं के शोध कार्य पर भी दृष्टिपात किया गया है।

६. इंटरनेट पर संगीत (तबला) से संबंधित जानकारी का लाभ उठाया गया है।

पुनर्विलोकन
(REVIEW OF LITERATURE)

प्रस्तुत विषय से संबंधित आंकड़े /तथ्य एकत्रित करने के पश्चात सबका पुनर्विलोकन कर त्याज्य आंकड़ों को छोड़ दिया गया है एवं संबंधित तथ्यों की विश्लेषणात्मक प्रस्तुति की गयी है।

उद्देश्य
(OBJECTIVES)

स्वतंत्र तबलावादन में 'गत' अत्यन्त महत्वपूर्ण रचना है। गत के बिना स्वतंत्र तबलावादन परिपूर्ण नहीं हो सकता। विभिन्न घरानों में अनेक प्रतिभावान रचनाकार और महान वादनकार हुए जिनका नाम आज भी आदर से लिया जाता है। इन महापुरुषों ने सुंदर गतें निर्माण कर स्वतंत्र तबलावादन समृध्द बनाने में प्रशंसनीय योगदान दिया है। इन परंपरागत गतों का अध्ययन तथा इनके सौंदर्यतत्त्वों का विचार नवनिर्मिति के लिए आवश्यक है । इसलिए भी कि इस सोच से आज के विद्यार्थी उच्चस्तर का वादन पेश कर सकें। गतों के विविध प्रकार, दहेज गत जैसे प्रासंगिक गतप्रकार, गतों के अंत में उपयोजित बोल, विभिन्न गतें बजाने का तरीका या तकनीक तालबध्द रूप में प्रस्तुत किया है।

जैसा कि ऊपर कहा गया है कि कई विद्वान रचनाकारों ने अद्वितीय गतों के निर्माण में योगदान दिया है। उनका लेखा-जोखा भी प्रस्तुत किया है।

इस शोध प्रबंध से आज की पीढ़ी पूर्वसंकल्पित रचनाओं से संबंधित जानकारी इकट्ठी करना चाहे तो वह इससे लाभ उठा सकती है और इससे आगे यदि पूर्वसंकल्पित रचनाओं पर अन्य शोधार्थी जब शोध करेंगे तो यह उनका आधार शोध ग्रन्थ बन सकता है।

शोध कार्यपध्दति एवं योजना
(RESEARCH METHODOLOGY AND PLANNING)

प्रस्तुत शोध प्रबंध में रचनात्मक तथ्यों का विश्लेषणात्मक कार्य पध्दति द्वारा प्रस्तुतिकरण किया गया है। इसके अन्तर्गत रचनाओं का संकलन कर इस प्रकार से प्रस्तुत किया गया है कि वह वैज्ञानिक होते हुए भी नए तथ्य को रोचक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। इसमें यह भी प्रयास रहा है कि इस कार्य पध्दति के अन्तर्गत तथ्यों का सहजसुलभ विवेचन जनमानस में स्वीकार्य हो। जैसा कि ऊपर कहा जा चुका है, इस क्षेत्र से संबंधित विद्वानों का साक्षात्कार कर, जानकारी प्राप्त की गई है और तथ्यों को प्रस्तुत करने हेतु कई वादकों से प्रश्नावली का प्रयोग भी किया गया है।

इसके अतिरिक्त विषय की मांग के अनुसार तथ्यों को जुटाने के लिए कलाकारों का जीवनवृत्त प्रस्तुत कर, उनके योगदान को भी वर्णित किया गया है।

स्थायी अध्याय
(CHAPTERISATION)

इस शोध प्रबंध को विभिन्न स्थायी अध्यायों में विभाजित किया गया है।

अध्याय १

तबले का इतिहास

तबला वाद्य के उद्गम के विषय में कई विद्वानों ने तथा बुजूर्गों ने संशोधन किया है। परन्तु तबले का जनक , उद्गम आदि के बारे में कोई प्रमाणित ग्रन्थ अथवा तर्कसंगत जानकारी उपलब्ध

नहीं है। तबला वाद्य निर्मिति के संदर्भ में 'टूटा तब भी बोला' याने 'तबला'जैसे तर्कविसंगत रंजक विधानों से हम परिचित है। विविध कालखंड एवं विविध प्रान्तों में तबले का उल्लेख है। तबला वाद्य विदेशों से भारत में आया है, ऐसा भी एक मतप्रवाह है। तबला वाद्य मेसॅपोटेमियन, सीरियन, अरेबियन संस्कृतियों से भारत में आया है तथा सुमेरियन, बाबिलोनियन एवं पर्शियन वाङ्मय के कई लयताल वाद्यों से तबला वाद्य का सम्बन्ध है - ऐसी सारी सम्भावनाएँ पं. अरविंद मुळगांवकर ने 'तबला' ग्रन्थ में व्यक्त की है। परन्तु स्याही के शास्त्रीय विधिवत लेपन से चर्मवाद्य को स्वरों का अद्वितीय परिणाम देने का संशोधन भारत में ही हुआ है। अत: तबला पूर्णत: भारतीय वाद्य है।

भारत के विभिन्न भागों की प्राचीन गुफाओं तथा मन्दिरों की पुरातन शिल्पों में आधुनिक तबला वाद्य से मिलती-जुलती तालवाद्यों की मूर्ति तथा भित्ति चित्र मिलते हैं। विभिन्न मतों के अनुसार तबला वाद्य महाराष्ट्र के 'सम्बल' तथा पंजाब के 'दुक्कड' वाद्यों का परिष्कृत रूप है। भरतकालीन 'त्रिपुष्कर' नामक वाद्य के ऊर्ध्वक एवं आलिंग्य इन दो अंगों से तबले का जन्म हुआ, ऐसा भी माना गया है। कई मतानुसार, तबला वाद्य का जनक हजरत अमीर खुसरो है परन्तु 'संगीत चिन्तामणि' के अनुसार केवल नाम साधर्म्य के कारण खुसरो खाँ के बदले हजरत अमीर खुसरो को तबला निर्मिति का श्रेय दिया गया है।

ख्याल गायकी का प्रचार पंद्रहवीं सदी के पूर्व हुआ था। उस समय ध्रुपद-धमार गायनशैली का साथी वाद्य पखावज था। ख्याल जैसी नाजूक गायनशैली के लिए गंभीर गाढ़ा स्वर निर्माण करनेवाला पखावज वाद्य अनुकूल नहीं था। अत: किसी अन्य वाद्य की आवश्यकता पड़ गयी, जो तबले के जन्म और विकास की जननी बनी। तबला वाद्य के विकास में इसकी बनावट अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। विशिष्ट बनावट के कारण सूक्ष्म तथा मुलायम नादनिर्मिति में सफलता पाकर तबला वाद्य ख्याल गायनशैली का सुयोग्य साथी वाद्य प्रस्थापित हुआ। बाद में बाज तथा घरानों के माध्यम से इस वाद्य के स्वतंत्रवादन की सामग्री विकसित हो गयी। बन्द और खुले बाजों के कारण तबले में नादविविधता उत्पन्न हुई। वर्ण, शब्द, वाक्य, वाक्यसमूह, रचना तथा बन्दिशों का निर्माण हुआ। निकासों से अलंकृत इस तालभाषा को प्रतिभासंपन्न कलाकारों ने सुंदर काव्यात्मक रूप प्रदान

किया। समृद्ध भाषा से सज़ी इन सौंदर्यपूर्ण रचनाओं का कलात्मक आनंद आज भी सभी वादक एवं श्रोताओं को मिलता है।

प्रस्तुत अध्याय में तबले का उद्गम, विकास, वर्ण, निकास, नादवैविध्य एवं समृद्ध भाषादि घटकों को उजागर करने की कोशिश की है।

अध्याय २

स्वतंत्र तबलावादन में विस्तारक्षम तथा पूर्वसंकल्पित रचनाओं का स्थान

विकसित वादन भाषा से संपन्न अवनध्द वाद्य है तबला। तबले की भाषा अक्षरों से बनी है। इन अक्षरों के प्रकार, स्वरमय-व्यंजनमय अक्षर तथा शब्दों की संरचना से निर्मित बंदिशों का विवेचन देने की कोशिश इस अध्याय के प्रारंभ में की है। स्वतंत्र तबलावादन में विशिष्ट शब्दों से युक्त विकसित निज़ी स्वतंत्र भाषा का वर्गीकरण दो रचनाप्रकारों में हुआ - विस्तारक्षम रचना और पूर्वसंकल्पित रचना। प्रत्येक रचना विशिष्ट नियमों के आधार से बनायी गयी है। सभी रचना एक-दूसरे से भिन्न है। इन तथ्यों का अध्ययन करने का प्रयास इस अध्याय में किया है।

उपज अंग से पेशकार का विस्तार, मुख के बोलों से कायदे का विस्तार तथा लोम-विलोम संकल्पना से रेले का विस्तार, चलन पर आधारित रौ, 'घिडनग' 'तिट' बोलों की गढन से बनी लड़ी तथा पलटे इन घटकों का अध्ययन कर पेशकार, कायदा, रेला, गतकायदा, लड़ी इन विस्तारक्षम रचनाओं की विस्तारपध्दति का अभ्यासपूर्ण विवेचन प्रस्तुत अध्याय में किया है। गत, गतटुकड़े, चक्रदार, तिहाई इन अविस्तारक्षम रचनाओं का स्वतंत्र सौंदर्यतत्त्व - गत की गतिमानता, जोरकस बोलों से सम पर आने का गतटुकड़ों का अंदाज, तिहाई तथा चक्रदार में अंतर्भूत गणिती सौंदर्य इन पर, इस अध्याय में विचार किया है। स्वतंत्र तबलावादन में रचनाओं का वादनक्रम तथा वादनक्रम-निश्चिति में आवश्यक शरीरशास्त्र के विचार को भी इस अध्याय में उजागर करने का प्रयास किया है।

संक्षेप में, तबले की समृध्द विकसित भाषा, रचनाओं का वर्गीकरण, उनकी संरचना, रचनाओं को पेश करने का क्रम इन मुद्दों को इस अध्याय में प्रस्तुत करने की कोशिश की है।

अध्याय ३

स्वतंत्र तबलावादन में गत एवं गत के विभिन्न प्रकारों का महत्त्व

स्वतंत्र तबलावादन में गत अत्यन्त महत्त्वपूर्ण रचना है। प्रतिभावान रचनाकारों को प्रकृति के विविध घटनाओं की तथा गतिमानता की अनुभूति हुई। उनके कवि-मन से तबले का सुंदर काव्य प्रतीत हुआ - जो है 'गत'। स्वतंत्र तबलावादन रंगतदार बनाने में गत का महत्त्वपूर्ण हिस्सा है, इसलिए स्वतंत्र तबलावादन में गत का अस्तित्व अनिवार्य है। इस तथ्य का अध्ययन तथा विविध ग्रन्थों में वर्णित 'गत' की परिभाषा तथा 'गत' संबंधी विद्वानों के विचार / साहित्य वाङमय इस अध्याय में प्रस्तुत किया है।

स्वतंत्र तबलावादन में पेशकार, कायदा, रेला इन विस्तारक्षम रचनाओं के बाद सर्वांगसुंदर गतें बजायी जाती हैं। गत रचना सम से पहले पूर्ण होकर पुनरावृत्त होती है। आम तौर पर गत का अंतिम अक्षर व्यंजन तथा कमजोरकस बोल होता है, लेकिन स्वर से पूर्ण होनेवाली गतें भी हैं। इन तथ्यों का विश्लेषण इस अध्याय में किया है। स्वतंत्र तबलावादन में कई वादक 'गततोडों' को 'गत' कहकर बजाते हैं। अतः गत तथा गततोडों का भेद स्पष्ट करने का प्रयास इस अध्याय में किया गया है। 'गत' रचना प्रकार में खाली-भरी अनुसार बोलों की तालबध्द योजना, बोलों का आन्दोलित होना, दायाँ-बायाँ का बंद-खुला नाद, आस-मींड का प्रयोग, सम विषम ग्रह, विभिन्न जाती, लयबंध, यतिभेद तथा गत की काव्यपंक्ति में अन्तर्भूत यमक, वृत्त, छन्द, अलंकार इन सौंदर्यतत्त्वों पर प्रकाश डालने का प्रयास इस अध्याय में किया है ।

अध्याय ४

विभिन्न घरानों की गतें, उनके प्रकार एवं उनकी विशेषता - एक दृष्टिकोन

विभिन्न विशेषताओं के अनुसार 'गत' के विभिन्न प्रकार हैं। इन गत प्रकारों की परिभाषा, खासियत प्रस्तुत करने का प्रयास इस अध्याय में किया है। रचनाओं से संलग्न सीधी गत, रेला गत, तिहाई सहित/रहित गत, दुमुखी गत, फरद गत; विविध लयबंधों पर आधारित तिपल्ली गत, मंझदार गत, गेंद उछाल गत; विभिन्न जातिदर्शक तिस्त्र, खंड, मिश्र गतें; बोलों के पुनरावर्तन से बनी दुधारी, तिधारी, चौधारी, पंजधारी गतें; ताली का स्थान अनुच्चारित रखकर की गई सब-अकाल, अतीत, अनागत गतें, खाली-भरी गत, काव्य-प्रकार वृत्त-छन्द पर आधारित गत तथा अन्य कई गतप्रकारों का विश्लेषण इस अध्याय में किया है ताकि इस विवेचन का उपयोग नवनिर्मिति में हो सकता है।

तुलनात्मक दृष्टि से खुले बाज में बंद बाज से अधिक मात्रा में गतों की निर्मिति हुई है। नादों की आस, उंगलियों का प्रयोग, दायाँ-बायाँ पर आघात पध्दति, चाट-लव का उपयोग, वेगमर्यादा - इन घटकों का अध्ययन कर खुले बाज से बंद बाज में अधिक 'गत' निर्मिति होने का कारण विशद करने का प्रयास इस अध्याय में किया है।

सभी घरानों के बुजूर्ग प्रतिभावान रचनाकारों ने तथा तबलावादकों ने सुंदर गतों की निर्मिति की है। 'गत' रचनाप्रकार के सम्बन्ध में फर्रूखाबाद घराना समृध्द है। इसका कारण इस घराने की वादनपध्दति तथा घराने के रचनाकारों की लाजवाब कल्पनाशक्ति। फर्रूखाबाद, लखनौ घराने की खुली तथा काव्यात्मक भाषा से बनी गतें, बनारस की फरद गतें, पंजाब घराने की मिश्र गतें, दिल्ली - अजराड़ा घराने की नाजूक किनार पर बजनेवाली सुंदर गतें इन सभी का विस्तृत विवेचन करने का प्रयास इस अध्याय में किया है।

विभिन्न घरानों के विद्वान उस्तादों की गिनी-चुनी परम्परागत गतों का संकलन तथा शास्त्रीय विवेचन भी इस अध्याय में किया गया है।

अध्याय ५

प्रतिभावान 'गत' रचनाकारों की जीवनी तथा गिनी-चुनी गतों का संकलन

सर्वांगसुंदर गत निर्मिति में सभी घरानों की महान विभूतियों का अनमोल योगदान रहा है। इन बुजूर्गों के जीवन का लेखा-जोखा, दीप्तिमान कलाकृति का वर्णन एवं इनकी गिनी-चुनी गतों का संकलन इस अध्याय में सम्मिलित किया गया है।

उपसंहार
(CONCLUSION)

प्रस्तुत शोध प्रबंध में विस्तारक्षम और पूर्वसंकल्पित रचना, गत के विभिन्न प्रकार, विभिन्न घरानों की परम्परागत गतें, उनका वादन विधि एवं तालबध्द प्रस्तुतिकरण के अन्तर्गत जो भी तथ्य और जो भी निष्कर्ष परिणाम स्वरूप सामने आए, उनका विवरण इसमें प्रस्तुत किया गया है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

	ग्रन्थों के नाम	ग्रन्थकार
१	तबला	पं. अरविंद मुळगांवकर
२	तबला-वादन कला और शास्त्र	पं. सुधीर माईणकर
३	सर्वांगीण तबला	पं. आमोद दंडगे
४	पखावज और तबला के घरानें एवं परम्परायें	डॉ. आबान मिस्त्री
५	ताल परिचय	डॉ. गिरीशचन्द्र श्रीवास्तव
६	लय ताल विचार	डॉ. शरच्चंद्र गोखले
७	भारतीय तालों का शास्त्रीय विवेचन	डॉ. अरूणकुमार सेन
८	तबला पुराण	पं. विजय शंकर मिश्रा
९	ताल शास्त्र	पं. भगवत शरण शर्मा
१०	ताल मार्तंड	पं. सत्यनारायण वसिष्ठ